बाल किलकारी

(बिहार बाल भवन का मासिक अखबार)

अंक-8, वर्ष - 2 | अगस्त-2016 | मूल्य 10/-

दोस्त,

हमारा मन भी चंचल है, एकदम चिड़ियों की तरह। हमेशा इधर-उधर फुदकते रहता है। यही मन कभी-कभी ऐसा काम करवा देता है, जिस पर सबको सोचने के लिए भी सोचना पड़ता है।

अच्छा दोस्तो, एक बात बताना जरा! अगर भगवान तुम्हारे घर आकर तुमसे पूछें कि तुम कैसी दुनिया में रहना चाहते हो, तो तुम क्या बोलोगे ? ऐसी दुनिया जिसमें सिर्फ बच्चे का ही राज हो। रोक-टोक कुछ नहीं।

यानी कि हमसब इस दुनिया से अलग बच्चिस्तान में रहना चाहते हैं, जहाँ सिर्फ बच्चे-ही-बच्चे रहते हैं। हमारे चंचल मन पर भी पढ़ाई-लिखाई का तनिक भी बोझ नहीं हो। जन्म से ही हम सब डॉक्टर, पुलिस, जज-वकील और साईंटिष्ट हों। तब तो हमारे मजे-ही-मजे होंगे। हम बच्चों की दुनिया में पेड़ भी नन्हें-मुन्हें बच्चे और सूरज-चंदा भी। बड़े-बड़े जानवरों से कितना डर लगता है, जैसे कि शेर, बंदर, भैंस, बाघ और भी बहुत सारे जानवर। जब वह भी हमारी तरह छोटे-छोटे होंगे, तब कितने प्यार लगेंगे न। फिर तो हमारा मन उछल पड़ेगा उनके संग खेलने का। फिर तो छोटे बाघ, छोटे पिल्ले, हिरण के बच्चे को देखकर दिल करेगा कि हम झट से उन्हें अपनी गोद में उठा लें। ऐसी दुनिया में तो सिर्फ खुशियाँ-ही-खुशियाँ होंगी। न भेद-भाव होगा और न ही ईर्ष्या।

अरे वाह! ऐसा तो दिल से तब निकलेगा, जब हमें पता चलेगा कि यहाँ भूत भी बच्चे हैं और भगवान भी। साथ ही नोट या डाक टिकट पर भी बच्चों का ही खिलखिलाता चेहरा।

तो दोस्तो, यह जानकर आपको लगा होगा कि काश! सचमुच ऐसी दुनिया होती तो क्या होता ?

इस बार मैं और आपके ही जैसे मेरे कई दोस्तों ने सोचा कि चलो एक ऐसी ही दुनिया की कल्पना करते हैं।

तो चलो-तैयार हो जाओ हमारी इस नयी दुनिया में घूमने के लिए।

किलकारी लाल प्रवीण कुमार

खाली हाथ कैसे लौटा दें

एक बार महाराज रणजीत सिंह कहीं जा रहे थे कि सामने से एक ईंट आकर उन्हें लगी। सिपाहियों ने चारों ओर नजर दौड़ाई, तो एक बुढ़िया दिखाई दी। उसे गिरफ्तार करके महाराज के सामने हाजिर किया गया।

बुढ़िया महाराज को देखते ही डर के मारे काँप उठी। बोली, "सरकार !मेरा बच्चा कल से भूखा था। घर में खाने को कुछ न था। पेड़ पर पत्थर मार रही थी कि कुछ बेर तोड़कर उसे खिलाऊँ, किन्तु वह पत्थर भूल से आपको आ लगा। मैं बेगुनाह हूँ ; सरकार, मुझे क्षमा किया जाय।"

महाराज ने कुछ देर सोचा और बोले, "बुढ़िया को एक हजार रुपये देकर ससम्मान छोड़ दिया जाए।"

यह सुन सारे कर्मचारी स्तम्भित रह गये। आखिर एक ने पूछ ही लिया, "महाराज! जिसे दण्ड मिलना चाहिए, उसे रुपये दिये जायेंगे?"

रणजीतसिंह बोले, "यदि निर्जीव वृक्ष पत्थर लगने पर मीठा फल देता है, तो पंजाब का महाराज उसे खाली-हाथ कैसे लौटा दे?"

विशेष कविता

बाकी बच्चे

कुछ बच्चों की नींद में बसता है परियों का अद्भुत संसार और बाकी बच्चों की नींद में अकसर सूखे हुए पात बजते हैं।

कुछ बच्चों की पीठ पर होते हैं पुस्तकों के रंगीन बस्ते और बाकी बच्चे नहीं जानते यहाँ तक कि अपने नाम।

आँख बंद करते ही कुछ बच्चे उड़ने लगते हैं आकाश में और बाकी बच्चे किसी-न-किसी हादसे का शिकार होते हैं।

कुछ बच्चे फूलों के रंग, तितलियों के पंख और लोहे की झनझननाहट को पुस्तक में पहचानते हैं और बाकी बच्चे उन्हें देखकर छूकर और झेलकर दुनिया को जानते हैं।

कुछ बच्चों से दुनिया नहीं बनती बहुत सारे बच्चे मिलकर दुनिया बनाते हैं।

कृष्ण मोहन झा

लिख भेजें हमारे पास

मेरे दोस्तो

इस बार हमलोगों ने सोचा कि... जिस तरह हिन्दुस्तान, चीन, जापान, इंग्लैण्ड जैसे देश हैं, वैसे ही कोई एक ऐसा देश होता, जहाँ केवल बच्चे-ही-बच्चे होते तो वह 'बच्चिस्तान' हमारा कैसा होता?।

हमारे नन्हें दोस्तों ने जो सोचा वह लिखा आप भी कुछ सोचिए और हमारे पास लिख भेजिए।

बाल सम्पादक

हाइकु

- इक दुनिया
  ईर्ष्या न भेदभाव
  खुशी की छाँव
- मस्ती है खूब,
  है आपस में प्यार
  बच्चिस्तान में।
- कोई रोता है
  कोई मुस्कुराता है
  क्या ज़िन्दगी है।
- है ये दुनिया
  देखो बड़ी अनोखी
  हम बच्चों की ।
- प्यारे, प्यारे ये
  हँसते-मुस्कुराते
  खिले हैं फूल।
- चिड़िया रानी
  चली आयी झुमती
  बच्चिस्तान रे।

घूमा डाला

5, 7, 11, 13, 17, ?

कौन-सा अंक इस पहेली को पूरा करेगा

पद्य कथा

जहाँ रहते छोटे-छोटे बच्चे-ही-बच्चे; मैं वहाँ की बात बताऊँ? बच्चिस्तान की कथा सुनाऊँ? था दो साल का छोटा बच्चा; था सोनार बहुत ही अच्छा। सर पर टोपी, मोटा पेट, आता दुकान पर हरदम लेट। पीकू बच्चा आया उसके पास बोल, मुझे चाहिए गहना खास। पेट सहलाकर बोला बच्चू सोनार, ''कैसा गहना चाहिए यार? बदले में कुछ पैसे लूँगा; पर वैसा ही दे दूँगा।'' बच्चे पिंकू ने जुबान खोली, ''आज बर्थडे मनाएगी मेरी बिल्ली। उसीके लिए प्यारा-सा, गहना दे दो न्यारा-सा।'' बच्चे सोनार से गहना लेकर; पिंकू लौटने लगा घर। रुक गया बच्चिस्तान ड्रेस दुकान पर; वहाँ छोटा-सा उसे दिखा फ्रॉक सुंदर। फ्रॉक खरीदकर चलता बना, तभी नन्हा चूहा उसे मिला। चूहा बोला, ''नन्हीं बिल्ली का है जन्मदिवस क्या; पार्टी में नहीं बुलाओगे क्या'' पिंकू बोला, ''आज शाम के चार बजे, सूरज करेगा ऐलान; सब आयेंगे बनकर मेहमान, आयेगा सारा बच्चिस्तान।'' अब जाकर के, पिंकू पहुँचा घर पे। शाम के बज गये ठीक चार; पहनके गहना और सुंदर फ्रॉक, छोटी बिल्ली हो गई तैयार। पशु-पक्षी, जीव-जन्तु इंसान, पार्टी में आये कई मेहमान; यहाँ न थी अमीरी गरीबी की पहचान, आया था पूरा बच्चिस्तान, दुश्मनी कहीं नहीं थी; बिल्ली चूहे या कुतिया हो नहीं। सबने मिलकर खुशी मनायी, बच्चा भूत, बच्ची डायन-चुड़ैल भी आयी। छोटा भी तारों संग, लेकर आया खूब उमंग दिल में सबके उठी तरंग सब पर छा गये खुशी के रंग।

प्रियंतरा

आओ खेलें-खेल

चलो एक नया खेल खेलते हैं। खेल का नाम हैं 'पास'। खेल खेलने से पहले सभी बच्चे गोलाकार में बैठे जायें। इस खेल में जितने चाहें, उतने बच्चे खेल खेल सकते हैं। अब खेल शुरू करते हैं। गोलाकार में बैठे बच्चों में से एक बच्चा गिनती शुरू करेगा। यह बच्चा खेल का संचालन करेगा। इस खेल में यह ध्यान रखना है कि यदि 3 'अंक' का खेल खेलना है तो गिनती इस प्रकार आगे बढ़ेगी। खेल खेलाने वाला बच्चा गिनती 'एक', कहकर शुरू करता है। दूसरा बच्चा 'दो' बोलेगा। तीसरे बच्चों को 'तीन' नहीं बोलना है। उसे 'पास' कहना है। फिर गिनती आगे बढ़ती है।ऐसा जो बच्चा तीन से मेल खाने वाले अंक को 'पास' या अंक बोल देगा, वह बच्चा खेल से बाहर हो जायेगा। इस तरह सौ तक गिनती करनी है। अंततः दो बच्चों के साथ गिनती होती है। एक बच्चा विजेता होगा।

कुछ नया करें

माचिस की गाड़ी

आओ माचिस की गाड़ी बनाते हैं। इसके लिए माचिस का एक खोखा और खाली माचिस की एक डिब्बी लें। उसके खुली ओर एक पारदर्शी झिल्ली चिपका दें। इससे जीप का सामने वाला शीशा या 'विंडस्क्रीन' बन जाएगी। खोखे की ऊपरी, नीचे और मसाले वाली सतहों पर रंगीन कागज चिपका दें। अब एक खाली माचिस लें और उसकी दराज को एक-तिहाई खोल लें। माचिस को अब उल्टा करें। थोड़ा फेवीकोल लगाएँ, जिससे दराज अपनी जगह से हिले या सरके नहीं। इस पर भी ऊपर वाली माचिस के रंग का ही कागज चिपकाएँ। अब खोखे को पूरी माचिस पर चित्र में दिखाए गये तरीके से चिपकाएँ। इससे पहिए, हेड लाईट और नम्बर-प्लेट भी लगाएँ। तैयार हो गयी माचिस की गाड़ी। क्या ऐसा और भी कुछ बना सकते हैं? तो कुछ नया करें।

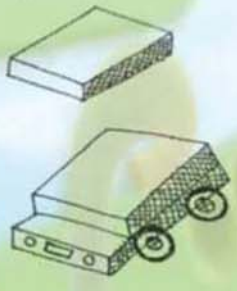

बूझो तो जानें

- घास-पात से मेरी यारी
  मेरा दूध बहुत गुणकारी
  बापू भी थे प्यार जताते
  बच्चे मुझे चराकर लाते।
- वर्षा ऋतु में मैं हूँ गाता
  जल-थल दोनों से है नाता
  जब मैं एक छलाँग लगाता
  कोई मुझे पकड़ न पाता
- छोटी-सी छोकरी
  लाल बाई नाम है
  पहने वो घाघरा
  एक पैसा दाम है।
- छोटे से गाजी मियाँ
  लम्बी-सी दुम
  बढ़ते जाएँ गाजी मियाँ
  घटती जाए दुम।
- चार खंभों पर चलते देखा
  आगे अजगर पलते देखा
  उजले-उजले उसके दाँत
  बिना उसके बेकार है खाना।

बच्चिस्तान के बच्चे

हमसब एक बच्चे हैं,
बच्चिस्तान के बच्चे हैं,
दिल के पूरे सच्चे हैं,
मनके थोड़े कच्चे हैं।
जुबाँ के थोड़े पक्के हैं,
यहाँ बच्चे-ही-बच्चे हैं।
पशु हैं बच्चे, पंछी बच्चे,
देश में पूरे बच्चे-बच्चे।
फूल हैं बच्चे, काँटे बच्चे,
पर्वत बच्चे, पेड़ भी बच्चे।
बुरा न कोई, सब है अच्छे,
बच्चिस्तान में बच्चे-बच्चे।

खुशबू, वर्ग - नवम्

किस्सा कहानी

बच्चिस्तान में स्वागत है

आसमान धरती से बोला, ''सुन बहना... तुझपर एक बच्चा टपका रहा हूँ।'' और फिर आसमान से एक बच्चा टपका और धरती की गोद में जा गिरा। कुछ देर तक वह धरती पर कान के बल लेटा रहा। मानो धरती उसे यहाँ के तौर-तरीके सीखा रही हो। धीरे से बच्चे की आँखें खुलीं.....। अभी वह एक दिन का ही था। वह सोच में पड़ गया, 'अरे मैं कहाँ से टपका।' फिर वह कमर पर हाथ रखते हुए बोला, ''हाय मेली कमल टोड़ डाली।'' उसके बाद बच्चा लड़खड़ाते हुए बालक पंडित जी के पास पहुँचा। शायद धरती ने उसे इस दुनिया की कुछ बातें बतायी थीं और कुछ नहीं...। बच्चे ने बालक पंडित जी की तरफ हाथ बढ़ाकर पूछा, ''पंडित जी, पंडित जी मेली लाशि क्या है? ''बालक पंडित जिसकी उम्र अभी नौ साल की थी; बच्चे का हाथ पकड़ा। बच्चा तुरंत बोल पड़ा, ''अले आपके शलील का तापमान 99° डिगली है। आपको तेज बुखाल आ छकता है। ''बालक पंडित हाथ देखकर बोला, ''मुबारक हो... तुम डॉक्टर राशि में टपके हो। इसलिए तो इतना बक रहे हो।'' बच्चा बोला, ''अच्छा तो मैं चलता हूँ। बालक पंडित बोल पड़ा, ''अरे! अरे!! कहाँ भागता है बच्चुआ। मेरे पैसे कौन देगा? बच्चा बोला, ''पल मैं तो अभी-अभी टपका हूँ। मेले पास पैछे कहाँ से आयेंगे।'' बालक पंडित बोला, ''चलो कोई बात नहीं।'' अब बच्चा वहाँ से चला इस दुनिया को थोड़ा और घूमने। बाहर सड़क पर यह नंगा-पुंगा खड़ा था कि तभी एक बच्चा सिपाही उसे पैसे देते हुए बोला, ''क्यूँ अभी-अभी टपके हो। जाओ कपड़े खरीद लो। ''बच्चा पहले से ही हक्का-बक्का था, अब परेशान भी हो गया। बच्चा सिपाही बोला, ''परेशान मत हो, यह दुनिया कुछ ऐसी ही है।'' अचानक से बच्चा बोल पड़ा, ''आपकी छाँछें गलम हैं। आपको बुखाल हो छकता है।'' बच्चा सिपाही बोला, ''बस-बस समझ गया। तुम डॉक्टर राशि में टपके हो। है न...।'' बच्चे ने पूछा, ''इछ अनोखी नगली का क्या नाम है।'' बच्चा सिपाही मुस्कुराकर बोला, ''बच्चिस्तान में स्वागत है।''

अभिनन्दन

खोजबीन

शरीर से मापें

क्या आपको पता है? कुछ समय पहले लम्बाई इंसान के शरीर के अनुपात से मापी जाती थी। जैसे हाथ या पंजों से, बित्तों से, कोहनी से, ऐसे ही गज और कदम आदि शरीर से जुड़ी मापें थीं। लेकिन इनमें बड़ी समस्या थी। सभी लोग एक जैसे नहीं होते थे। कोई लम्बा, कोई छोटा, कोई मोटा तो कोई पतला होते थे। इसलिए एक इंसान की माप दूसरे की माप के बराबर नहीं होगी। इस परेशानी से निकलने के लिए हर देश में राजा तय करता था कि उसका शरीर ही मानक है। लेकिन समस्या फिर भी थी। एक राजा की मृत्यु के बाद नया राजा बनता था। वह पतला या छोटा हो सकता था। फिर से समस्या पैदा हो जाती थी।

जैसे-जैसे सभ्यता का विकास हुआ, मानक मापदण्ड प्रयोग में आने लगे।

भूतों का रक्षाबंधन

छोटी बहना चिंकी ने सोनू को राखी बाँधी और दोनों ने मीठे-मीठे रसगुल्ले खाए। उनके घर के बगीचे में जो पेड़ था, उससे खिड़की के अंदर की सारी चीजें दिखाई देती थीं। वहीं से फोकत लाल और चोकत लाल सब देख रहे थे। वे दोनों बच्चे भूत थे। ''अरे वाह! कितने दिन हो गये, मीठे-मीठे रसगुल्ले खाने को नहीं मिले।'' फोकत लाल बोला। अरे यार, ''चलो हम सब चिंकी के घर राखी बंधवाने चलते हैं, ऐसे हमें भी कुछ अच्छा खाने को मिल जायेगा और हम उसे भी कुछ दे देंगे। जब दोनों चिंकी के घर पहुँचे तो चिंकी ने बड़े प्यार से उनका स्वागत किया। ''अरे चिंकी कैसी हो बहन क्या हम दोनों को पहचाना? ''उन्होंने पूछा। चिंकी बोली, ''नहीं भईया।'' वे बोले, ''हमलोग तुम्हारे पड़ोसी बच्चा भूत हैं, क्या तुम डरी नहीं?'' चिंकी बोली ''हाँ, लेकिन आप दोनों तो अच्छे वाले भूत लगते हैं, डरावने वाले नहीं।'' दोनों भाई बोले, ''क्या तुम हमें राखी बाँधेगी ?'''' बिल्कुल लेकिन मेरी रक्षा तो करिएगा न?'' चिंकी ने पूछा। उन्होंने 'हाँ' में सिर हिलाया। चिंकी ने दोनों को राखी बाँधी और रसगुल्ले भी खिलाये। तथा चोकत लाल बोला, ''ये गिफ्ट तो खोलो, हम तुम्हारे लिये लाये हैं।'' चिंकी ने गिफ्ट खोला ''आ....।'' अचानक से वह डर गई, इतना डरावना हाथ, पर ये क्या, ये तो...इस हाथ में चॉक्लेट्स हैं। चॉकलेट्स देखकर वह खुश हो गई और दोनों बच्चे भूत भी अपने घर वापस चल दिए।

शुभम श्री, वर्ग - 8

यहाँ पर सब बच्चे हैं

हम बच्चों का यह बच्चिस्तान,
कोई नहीं है बूढ़ा-जवान,
यहाँ हैं बच्चे हर जहाँ,
इसलिए कहलाता यह बच्चिस्तान ।

हीरो हो या हीरोईन हो,
हो चाहे वो खिलाड़ी,
यहाँ पर सब बच्चे हैं,
डॉक्टर हो या मदारी।

प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री यहाँ,
सारे ही नेता रहते हैं,
भईया का कुर्ता पहनकर,
भाषण देते रहते हैं।

जैसे ही रात होती,
बच्चा भूत, बच्चा डायन
साथ ही बच्चा चुड़ैल आ जाता है,
तांत्रिक बच्चा वहाँ आकर,
सब अपना खेल दिखाता है।

भगवान भी बच्चे यहाँ,
यहाँ न छुआ-छूत, जात-पात,
ना भेदभाव करता कोई,
सब यहाँ पर रहते साथ।

इतना प्यारा यह स्थान,
इसलिए कहलाता यह बच्चिस्तान।

राजेश्वरी

बच्चास्थानी

बैठे-बैठे सोच रही मुनिया
बड़ी अनोखी बच्चों की दुनिया।
जहाँ का बच्चा ही ड्राइवर है,
बच्चों का अपना साईबर है।
शेर का बच्चा, गाय का बछड़ा
नहीं किसी से किसी का झगड़ा।
आम, संतरा, लीची पेड़
बच्चे-बच्चे-बच्चे ढेर।

शाम-सुबह और रात-दिन,
सब समय हो अपनी मर्जी।
बच्चे नाई, बच्चे दर्जी,
बच्चे ही मैडम और सर जी।

ऐसी ही एक दुनिया हमारी,
जहाँ चलती अपनी मनमानी।
और हम सब बच्चे कहलाते हैं
प्यारे-दुलारे बच्चिस्तानी।

ध्रुव कुमार

इस अंक के रचनाकार -प्रतिभागी- शुभम्, युवराज, ट्वींकल, खुशबू, नीरा, अमन, राजेश्वरी, आदित्य, हर्षराज, पूनम, तुलसी, रौशन, अनन्या, कृष राज, रानी, सुमन।
बाल सम्पादक - मुनटुन, अतुल, प्रवीण, सम्राट, घुँघरु, अभिनंदन, प्रियंतरा,
संयोजक - सुधीर कुमार, विशेष सहयोग - वीरेन्द्र कुमार पाठक
कार्यकारी सम्पादक - राजीव रंजन श्रीवास्तव
सम्पादक - ज्योति परिहार, निदेशक बिहार बाल भवन किलकारी, पटना
कार्यालय - बिहार बाल भवन सैदपुर, किलकारी, पटना-800004 (बिहार)

इस अंक के जवाब

घूमा डाला - 19

बूझो तो जानें - बकरी, मेढ़क, लाल मिर्च, सूई-धागा, हाथी

[No.G1/Mail/Registration/Renewal/PT-73/2015

खुशियों की बहार

हम बच्चों की दुनिया बड़ी ही,
अनोखी-सी अनमोल हो
यहाँ जिधर भी नजर घुमाओ,
बच्चों का ही बोल है।

उम्र में ये यहाँ हैं सभी
पन्द्रह साल से नीचे।
नन्हीं-नन्हीं उँगलियों से,
सुन्दर भविष्य सींचे।

ना ही किसी के भीतर
ऊँच-नीच का भाव है।
मिल खेलें साथ यहाँ
गजब बड़ा स्वभाव है।

बच्चों की इस दुनिया में
बच्चों के गजब काम हैं।
अपनी रंगीन कलाओं से,
बिखेरते खूब मुस्कान हैं।

उसे बच्चे को देखो भईया,
ले आला बन गया है डॉक्टर।
देखो उस बच्चे को कैसे,
मज़े से उड़ाता हेलिकॉप्टर।

वहीं खेत-खलिहानों में भी,
बच्चे अनाज उपजाते हैं।
गाँव के मुखिया जी अब तो,
बच्चे ही कहलाते हैं।

कितना प्यारा और दुलारा,
बच्चों का संसार है।
जिधर भी हम नजर घुमाएँ,
खुशियों की बहार है।

मुनदुन राज

दुनिया बच्चों वाली

भाषा हमारी प्यारी-प्यारी
हम बच्चों की दुनिया न्यारी।

यहाँ कोई न भेदभाव,
हमारी दुनिया में बदलाव।

डॉक्टर हम, हम ही नेता,
रिश्वत न कोई लेता-देता।

गाड़ी छोटी, बिल्डिंग छोटी,
ऊँची न पहाड़ की चोटी।

कोई न यहाँ रोकने वाला,
एक-दूसरे के हैं रखवाला।

गलत कामों में बिल्कुल जीरो,
हम बच्चे हर फिल्म के हीरो।

चाँद बच्चे, हैं बच्चे तारे,
दुनिया में बच्चे ही सारे।

छोटी कोयल गाए मतवाली,
मेरी दुनिया बच्चों वाली।

सम्राट,
वर्ग - नवम्

चलो घूमने चलें

कल्पना लोक की सैर करें

दोस्तो! जब भी हम कोई कहानियाँ सुनते हैं तो उसकी कल्पना करने लगते हैं। हाँ जैसे परिलोक की, स्वर्गलोक की आदि। आइये, आज हम एक नये लोक की कल्पना करेंगे। इस लोक का नाम है बच्चेस्तान। जहाँ सिर्फ जन्म से पन्द्रह वर्ष तक के बच्चे ही रहते हैं, और यहाँ के पेड़-पौधे, घर, गाड़ियाँ, सड़कें और सभी चीजें उनके ही जैसी हैं। हमारी बातें सुनकर आपको जब मज़ा आ रहा है तो वहाँ घूमने में कितना मज़ा आयेगा। ये लीजिए, मेरी जादुई टॉफी खाइये और खो जाइये बच्चेस्तान की दुनिया में। वो देखिए हरे-भरे पौधों से ढकी छोटी-छोटी पहाड़ियाँ और वो नीचे की ओर जाती घुमावदार सड़क, चलिए आगे बढ़ते हैं। अरे! साइड हो जाइए गाड़ी आ रही है। वो मिनी बस आ रही है। चलिए, उस पर बैठकर यहाँ का लुत्फ उठाते हैं! अरे वाह। यहाँ तो बस का कंडक्टर और ड्राइवर भी बच्चे हैं। अहा! बस में सीटें भी कम हैं, इसके बावजूद भीड़ भी नहीं है। चलिए, वो साइड वाली सीट पर बैठते हैं। सड़क के उस तरफ फुटपाथ पर देखिए, टिंकू और उसके दोस्त किस तरह बस्ता संभालते हुए जा रहा है। उन्हें देखिए-पता है आपको वो हमारी दुनिया के सबसे बड़े बच्चे हैं डॉ.शेखु। देखिए कितनी फूर्ति से अपने अस्पताल की तरफ जा रहे हैं। वो सामने उच्चन्यायालय है खिलौना घर की तरह। पिंटू और चिंटू उधर ही जा रहे हैं। चले क्या उनके पीछे? वे तो बड़े हॉल में जा रहे। लगता है कोई माजरा है वो डेस्क के पीछे लम्बी वाली कुर्सी जज की है। जज साहब नहीं दिखाई दे रहे। अरे, अब दिखाई दिए जब कुर्सी पर वो खड़े हुए। पता है वो रॉकी है। पड़ोस में ही रहता है। लगता है, अपने भईया का कुर्ता पहन लिया है। इन्हें मामला सुलझाने देते हैं। तब तक कुछ खा-पी लिया जाए। बड़े जोरों की भूख लगी है। वो सड़क के उस तरफ मोटी का ढाबा है। अपना स्कूल वाला मोटी यहाँ का शेफ है। हम दोनों तीसरी क्लास में पढ़ते हैं। वो देखो, शीशे से डेंटिस्ट रिंकी दूसरी कक्षा वाली सुकून के दाँत ठीक कर रही है। उसे चॉकलेट खाने के लिए मना करती है, जबकि खुद भी अपने क्लास की रिया से चॉकलेट माँगकर खाती है। चलिए, आपको अपना घर दिखाते हैं। वो गली के मोड़ पर गुंबद वाला घर नर्सरी में पढ़ने वाले चिकु का है। पता है वो यहाँ का सबसे अच्छा हीरो है और उसकी दोस्त चिक्की भी अच्छी हीरोइन है। जब उनकी फिल्म लगती है तो पूरा हॉल भरा होता है। वो दायीं तरफ जो बेलन जैसा दिखने वाला घर है, वो सुखी का है। वो गुल्लीडंडा में इतना माहिर है कि बच्चीस्तान ओलंपिक में तीन बार गोल्ड मेडलिस्ट रहा है। आईये, मैं आपको अपने दोस्तों से मिलवाती हूँ। वो वहाँ पार्क में हैं। वो हैं पपी और उसके भाई। अभी छह महीने के ही हैं कितने खूबसूरत हैं ना। इनकी पूँछ मुझे बहुत प्यारी लगती है। कल अपने प्रधानमंत्री, वही जिनकी पैंट उनसे भी बड़ी है, यहाँ आये थे। एक हाथ से अपनी पैंट पकड़े थी और कोशिश कर रहे थे। सड़क के उस तरफ बैंक ऑफ बच्चेस्तान है चलिए हम भी अंदर चलते हैं। वो देखिए काउन्टर पर बैठे छोटे साहब नोटों की गड्डियाँ गिन रहे हैं। नोट का आकार छोटे टोकन जैसा है, जिस पर फूले गालों वाला खिलखिलाता बच्चे की तस्वीर है। सबने पैसों से पॉकेट भर लिये तो बाहर चले। और जगहें भी घुमना है। वो देखिए, यहाँ बाल कृष्ण, बाल गणेश व बाल हनुमान की विशेष रूप से पूजा की जाती है। हमने दर्शन कर लिए। अब जरा प्रकृति का सौन्दर्य को निहारा जाए। वाह! कितनी खूबसूरत है ये हरियाली। रंग-बिरंगे फूलों की ये खूबसूरत वादियाँ और इनकी खुशबुएँ। अहा मानो मन मोह रही हों। इतनी कड़ी धूप में भी ऐसा लग रहा है। यहाँ एक बात तो पता चली-यहाँ सैर करने से बच्चों की दुनिया में न कोई भेद-भाव है और ना ही जाति-धर्म-ईर्ष्या नाम की चीज है यहाँ तो बस दोस्ती और प्यार बसा है, पर्व-त्योहार होता है। तो मज़ा आया न इस कल्पना लोक की सैर करने में, फिर आना चाहेंगे न यहाँ।

घुँघरू एवं तुलसी, लवली

झरोखा

किलकारी में रक्षा-बंधन पर चित्रकला प्रतियोगिता

अंतर्ज्योति बालिका विद्यालय में रक्षा-बंधन

किलकारी में सावन महोत्सव

किलकारी में 70वाँ स्वाधीनता दिवस

वेलकम टू बच्चिस्तान

मेरा सर चकराया,
मैं कहाँ से आया,
धरती ने मुझे उगाया,
या आसमान ने टपकाया।
आँखें खोलकर मैंने देखा,
यहाँ तो बहुत अचम्भे थे,
सब थे मुझसे छोटे बच्चे,
ना बड़के, ना लंबे थे।

देखा-हर जगह मैंने तो,
दीखते हैं सिर्फ बच्चे
सारा काम इनको करते देख,
खा जाता मैं गच्चे।
मैंने पूछा-भाई मुझे बताओ,
कौन-सा यह स्थान,
किसी ने हँसकर बताया,
वेलकम टू बच्चिस्तान।

दूरभाष : 0612-3224919, 2661295 ई-मेल : info@kilkaribihar.org ब्लॉग : kilkaribihar.blogspot.in फेसबुक : www.facebook.com/kilkaribihar यूट्यूब : www.youtube.com/kilkaribihar